उत्तम दश धर्म

आत्मस्वभाव स्वरुप सम्यक्त व भावलिंग मुनिपने की उत्कृष्ट दशा के द्योतक

उत्तम दश धर्म व श्रमण त्रय

तथा

आत्मसाधना का पुरुषार्थ जागृत करने वाले व सांसारिक मोह को घटाने वाले
पू. बहिनश्री के अपूर्व

वचनामृत

Exhibit

GURU KAHAN ART MUSEUM

www.gurukahanmuseum.org

Sponsor

Shree
Kundkund - Kahan
Parmarthik Trust
Mumbai

Organiser

PAINTERNET
ART EXCHANGE

www.painternet.com

First Published 2019
By Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust

All rights reserved only with:
Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust
302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg,
Vile Parle (West), Mumbai - 400056.INDIA.
Tel. No.: +91 22 2613 0820
Telefax: +91 22 2610 4912
Email: info@vitragvani.com
Web: www.vitragvani.com

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publishers.

Conceptualized by **Nikhil Mehta & Rahul Jain**
Designed and printed by **7thSense**
Photography by **Mr. Vipul Patel**
Edited and visualized by **Rahul Jain**

ISBN No.: 978-93-81057-51-3
Price: INR 200/- & US $5

अहो! धन्य मुनिदशा...

मुनिदशा के संबंध में पूज्य सद्गुरुदेवश्री के हृदयोद्गार...

अहो, धन्य वह मुनिदशा!

अहो! मुनिवर तो आत्मा के परम आनन्द में झूलते-झूलते मोक्ष की साधना कर रहे हैं। आत्मा के अनुभवपूर्वक दिगम्बर चारित्रदशा द्वारा मोक्ष सधता है। दिगम्बर साधु माने साक्षात् मोक्ष का मार्ग। वे तो छोटे सिद्ध हैं, अन्तर के चिदानन्दस्वरूप में झूलते-झूलते बारम्बार शुद्धोपयोग द्वारा निर्विकल्प आनन्द का अनुभव करते हैं। पंचपरमेष्ठी की पंक्ति में जिनका स्थान है ऐसे मुनिराज की महिमा का क्या कहना! ऐसे मुनिराज के दर्शन मिलें वह भी महान आनंद की बात है। ऐसे मुनिवरों के तो हम दासानुदास हैं। उनके चरणों में हम नमन करते हैं। धन्य वह मुनिदशा। हम भी उसकी भावना भाते हैं।।

किसी को ऐसा लगे कि जंगल में मुनिराज को अकेले-अकेले कैसे अच्छा लगता होगा? अरे भाई! जंगल के बीच निजानन्द में झूलते मुनिराज तो परम सुखी हैं; जगत के राग-द्वेष का शोरगुल वहाँ नहीं है। किसी परवस्तु के साथ आत्मा का मिलन नहीं है, इसलिए पर के सम्बन्ध बिना आत्मा स्वयमेव अकेला आप अपने में परम सुखी है। पर के सम्बन्ध से आत्मा को सुख हो -ऐसा उसका स्वरूप नहीं है। सम्यग्दृष्टि जीव अपने ऐसे आत्मा का अनुभव करते है और उसी को उपादेय मानते हैं।।

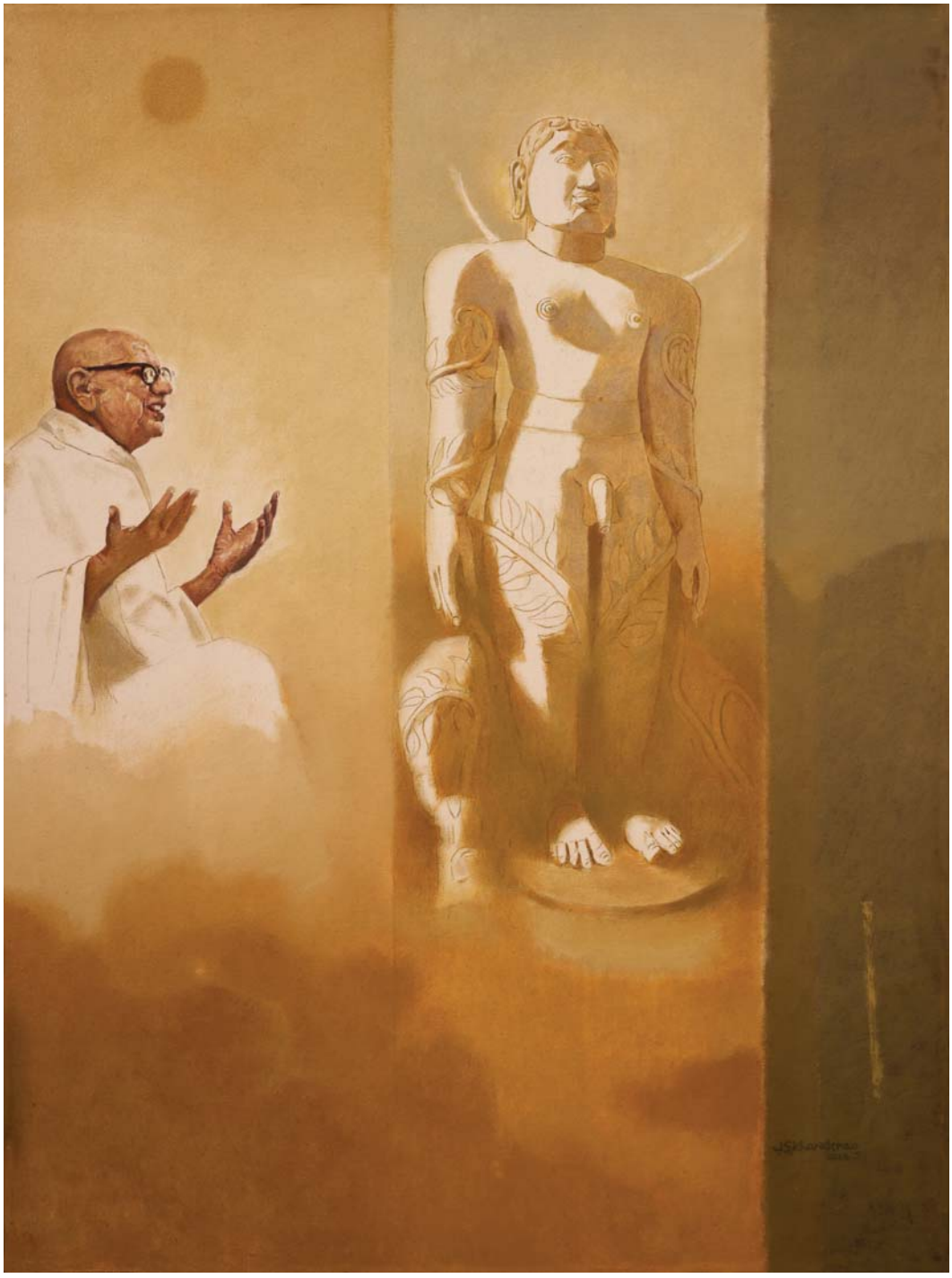

अध्यात्मयुगसृष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

'दशधर्म एवं बहिनश्री के वचनामृत'

: प्रस्तावना :

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्॥

इस भरतक्षेत्र की पवित्रभूमि में जगत्पूज्य त्रिलोकीनाथ भगवान आदिनाथ से लेकर महावीरस्वामी तक वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकरों ने समग्र पदार्थों की स्वाधीन व्यवस्था और आत्मानुभूतिरुप मोक्षमार्ग का निरुपण अपनी सातिशय दिव्यध्वनि द्वारा अभिव्यक्त किया। इन तीर्थंकरों के निर्वाण के पश्चात् परम्परा से वही ज्ञान भरतक्षेत्र के महासमर्थ आचार्य कुन्दकुन्ददेव को प्राप्त हुआ, जिन्होंने समयसारादि परमागमों की रचना कर जिनेन्द्र परमात्मा के द्वारा उद्घाटित मूल मोक्षमार्ग को सुरक्षितरुप प्रदान किया तथा इन ग्रन्थों की टीका का महासौभाग्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव एवं मुनिराज पद्मप्रभमलधारिदेव आदि वीतरागी सन्तों को प्राप्त हुआ।

इन्हीं वीतरागी सन्तों की पावन परम्परा में अनेकों भावलिंगी सन्तों ने आत्मानुभूति में कलम डुबो-डुबोकर अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिसमें वस्तु स्वातन्त्र्य के अद्भुत सिद्धान्तों के साथ-साथ ज्ञानी धर्मात्माओं की अन्तर परिणति में प्रवर्तमान दशधर्मों का भाववाही विवेचन उल्लेखनीय है। प्रस्तुत पुस्तक में उन आचार्यों को आधार बनाकर उनकी अन्तर परिणति में वर्तते दशधर्मों का परिचय देते हुए १३ चित्र समायोजित किये गये हैं।

वीतरागी सन्तों के इसी पावन प्रवाह को अनेकों गृहस्थ ज्ञानी-विद्वानों ने आगे बढ़ाया है, जिसमें वर्तमान काल में अध्यात्ममूर्ति पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। गुरुदेवश्री ने अपने पैंतालीस वर्षीय आध्यात्मिक जीवनकाल में परमागमों पर अनवरत प्रवचन कर वीतरागी सन्तों के सन्देशों को जन-जन तक पहुँचाने का महान कार्य किया है। साथ ही जिनकी परम कृपा से अनेकों भव्य जीव आत्महित के सन्मुख हुए हैं, उन्हीं जीवों में विशिष्ट उल्लेखनीय नाम पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन का है। पूज्य बहिनश्री के प्रवचन / स्वाध्याय से संग्रहित विशिष्ट वचनामृत ग्रन्थ 'बहिनश्री के वचनामृत' गुरुदेवश्री के हाथ में आने पर उन्होंने इस ग्रन्थ की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए इस ग्रन्थ की एक लाख प्रतियाँ छपाने का अहोभाव व्यक्त किया एवं समग्र ग्रन्थ पर आद्योपान्त प्रवचन कर इसमें समाहित रहस्यों का उद्घाटन भी किया। इसी भावना से प्रेरित होकर इन वचनामृतों के आधार से भी २४ पेंटिंग तैयार की गयी हैं, जिन्हें भी प्रस्तुत पुस्तक में सम्मिलीत किया गया हैं। जिससे पात्र जीव इन कलाकृतियों के माध्यम से वचनामृतों का रहस्य समझ सकें।

इस कार्य को मूर्तरुप देने में जो अद्भूत एवं अकल्पनिय कार्य चित्रकार श्री अनिल नायक द्वारा किया गया है उसके लिये संस्था उनकी आभारी है तथा इस कार्य में कार्यरत गुरु कहान कला संग्रहालय की पूरी टीम को धन्यवाद ज्ञापित करती है। सभी जीव इन पेंटिंग्स के माध्यम से सम्यक्तव रुपी दशधर्म एवं बहिनश्री के वचनामृतों का रहस्य समझकर आत्महित साधें, यही भावना है।

– श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

उत्तम दश धर्म व श्रमण त्रय

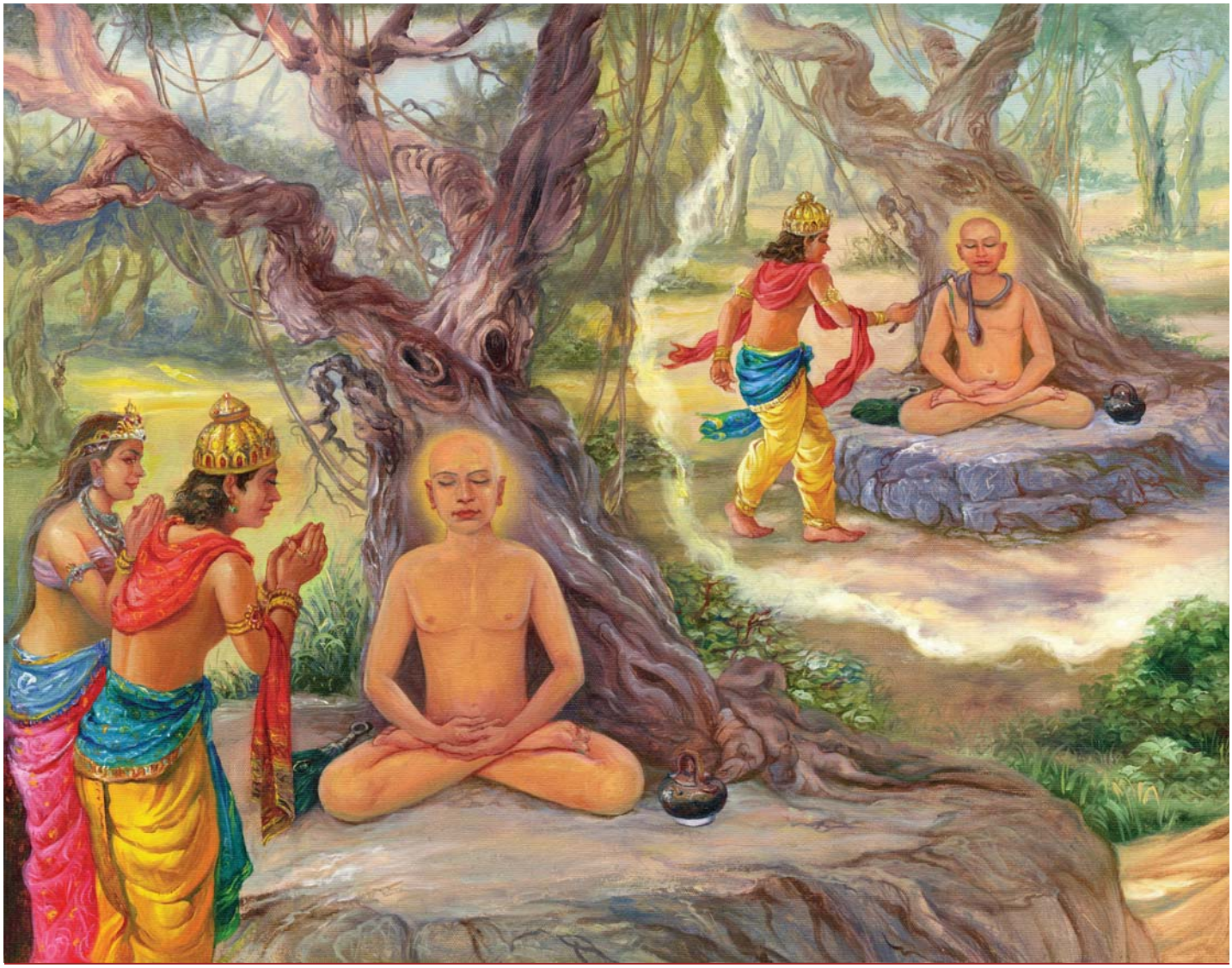

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम क्षमा

एक समय राजा श्रेणिक वन में शिकार खेलने गये वहाँ उन्होंने दिगम्बर मुनिराज को ध्यानमग्न देखा; उन्हें देखकर उनके मन में द्वेष भावना जागृत हो गयी और श्रेणिक ने वहाँ मरे पड़े हुए सर्प को मुनिराज के गले में डाल दिया। जब रानी चेलना को राजन के इस दुष्कृत्य के बारे में ज्ञात हुआ, तब राजन को दिगम्बर मुनिराज का स्वरूप कथन करके उस स्थान पर प्रस्थान किया तथा मुनिराज यशोधर का उपसर्ग दूर किया; तब मुनिराज ने दोनों को “सद्धर्म वृद्धि अस्तु”, ऐसा समान आशीर्वाद दिया। अहो! धन्य हैं वे उत्तम क्षमाधर्म के धारी मुनिराज जो उपसर्ग करनेवाले तथा दूर करनेवाले में किञ्चितमात्र भी भेद नहीं करते।

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम मार्दव

एक बार एक चक्रवर्ती अक्षौहिणी सेना के साथ दिग्विजय यात्रा से लौट रहे थे। तभी उन्होंने एक दिगम्बर मुनिराज को ध्यानमग्न देखा, उनकी अद्भूत सौम्य छवि को देखकर चक्रवर्ती, अमूल्य रत्न-जवाहरात से भरे हुए थालों को उनके चरणों में अर्पित करते हुए चरणारविन्द में नमस्कार करते हैं, परन्तु उन मार्दवधर्म के धारी मुनिराज को तो चक्रवर्ती और दरिद्रि दोनों ही समान है, उन्हें किसी के द्वारा मान-अभिमान की अभिलाषा ही नहीं है; अतः वह दिगम्बर मुनिराज अपनी मार्दव स्वभावी आत्मा में ही सदा लीन रहते हैं।

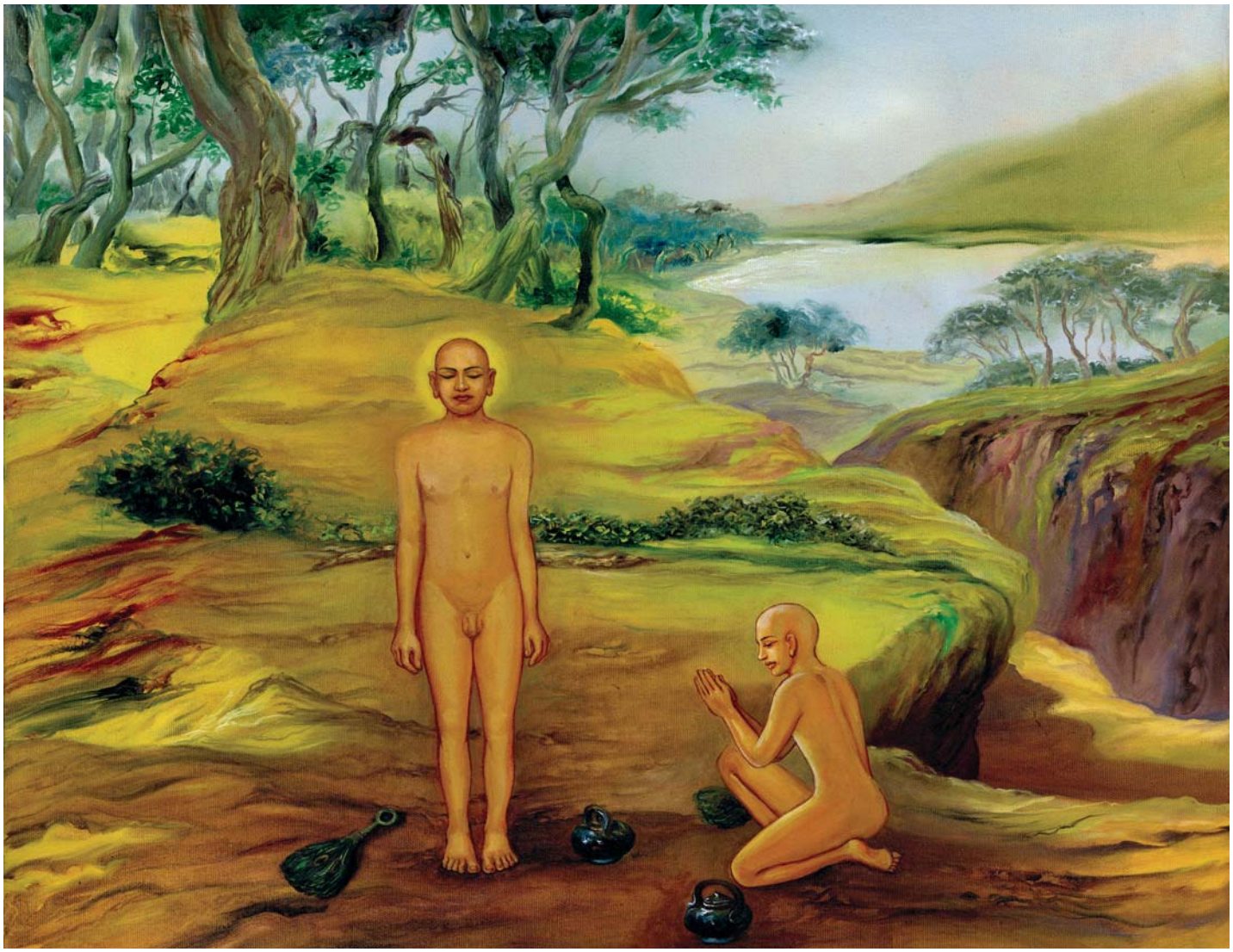

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम आर्जव

अहो! धन्य हैं वे आर्जव धर्म के धारी मुनिराज जो सरलता के सच्चे प्रतीक हैं। जिनके अन्दर माया कषाय का रञ्च भी नहीं है ऐसे उन मुनिराज से अयत्नाचार से यदि कोई दोष हो भी जाये तो वह स्वत: ही अपने गुरु के सामने अपने दोषों का वर्णन करते हुए प्रायश्चित ग्रहण करते हैं तथा आर्जव स्वभावी आत्मा के ध्यान में लीन रहते हैं। ऐसे आर्जवधर्म के धारी मुनिवरों के चरणारविन्द में नमन।

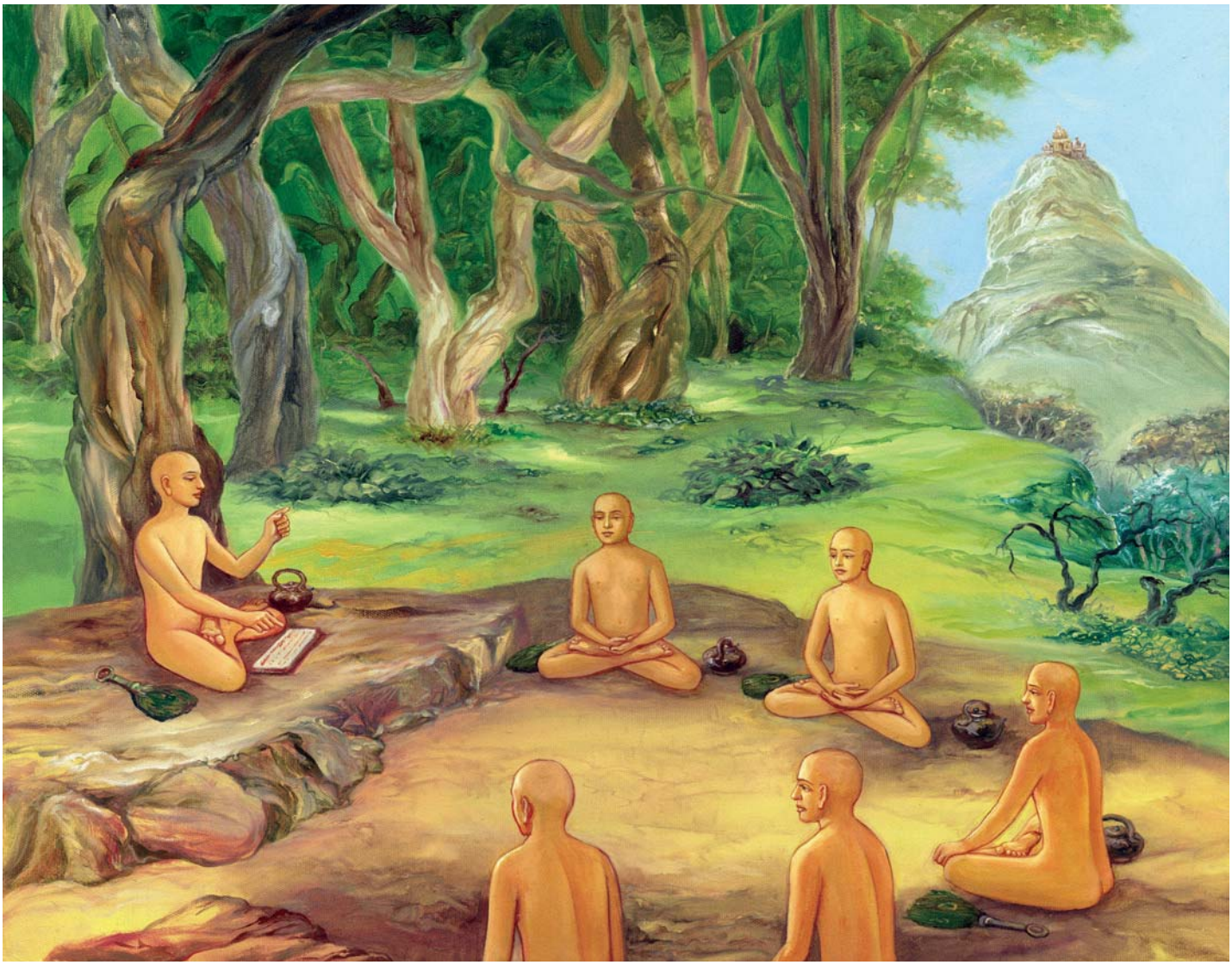

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम सत्य

अहो! जंगलवासी दिगम्बर मुनिराज के अंतर में सत् स्वभावी वस्तु स्वरूप का झरना बहता है, उन मुनिराज की हित-मित-प्रिय वाणी को सुनकर भव्य जीवों का मार्ग प्रशस्त होता है। उनके कथनों में सदा सत् स्वभावी आत्मा का व्याख्यान होता है, जिसके आश्रय से अनन्त जीव मोक्ष को प्राप्त कर चुके हैं तथा इसी मार्ग से अनन्त जीव मोक्ष को प्राप्त करेंगे। ऐसे वह दिगम्बर मुनिराज निरन्तर निर्दोष रुप से सत्य धर्म का पालन करते हैं।

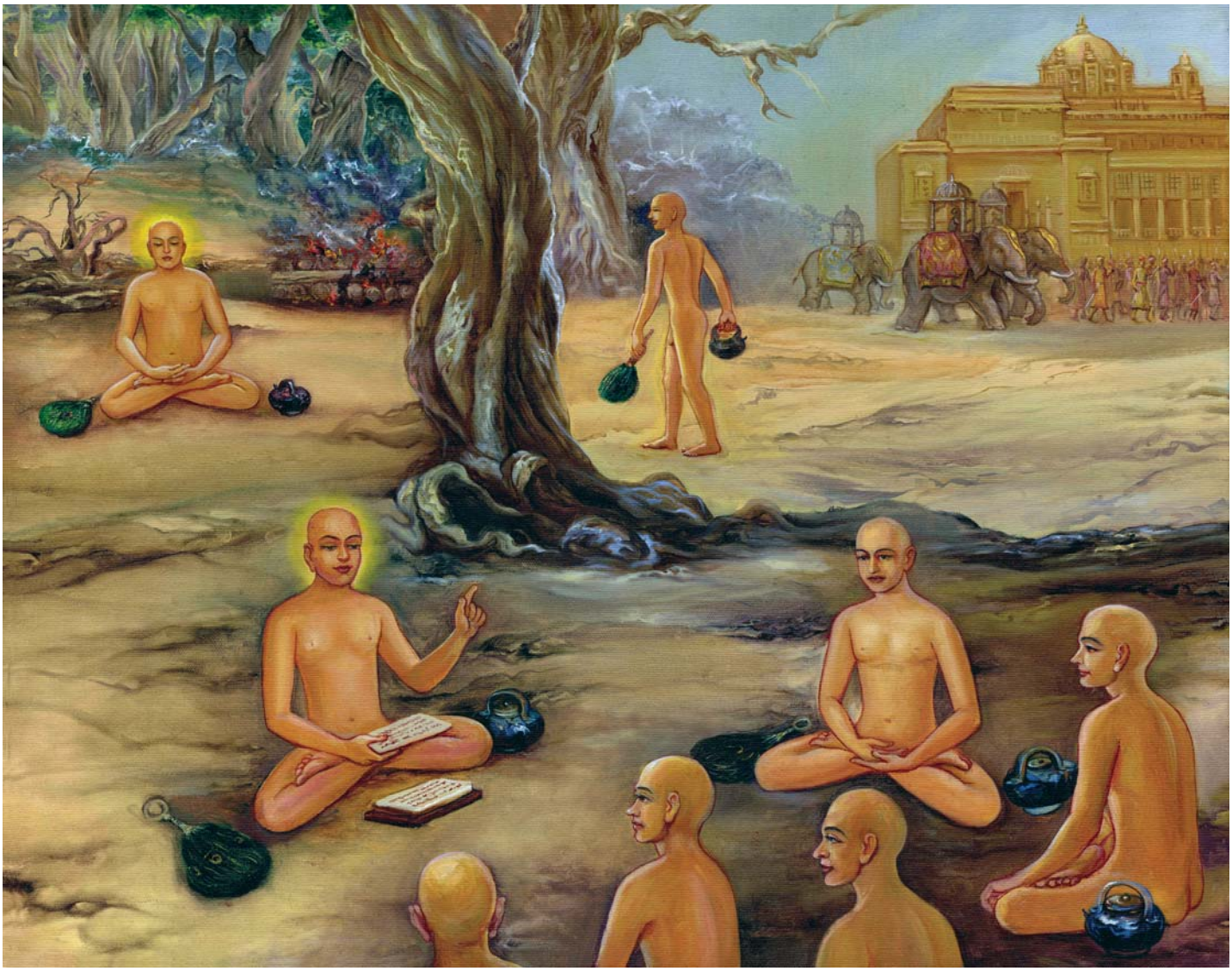

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम शौच

अहो! धन्य हैं निज स्वभाव में जागृत ऐसे जीव जिन्होंने आत्मा को परम-पवित्र जानकर सांसारिक पदार्थों स्वर्णमहल, हाथी-घोड़े इत्यादि राजवैभव को संसार का कारण जानकर उसका त्याग करके तथा परम अशुचि इस शरीर से राग बुद्धि को हटाते हुए परम् पवित्र जिनमुद्रा को धारण किया है तथा संसार, शरीर, भोगों में पूर्ण लोभ भाव का अभाव करके निरन्तर शौचधर्म का पालन करते हैं तथा निर्मल पवित्र आत्मस्वभाव की ही आराधना करते है।

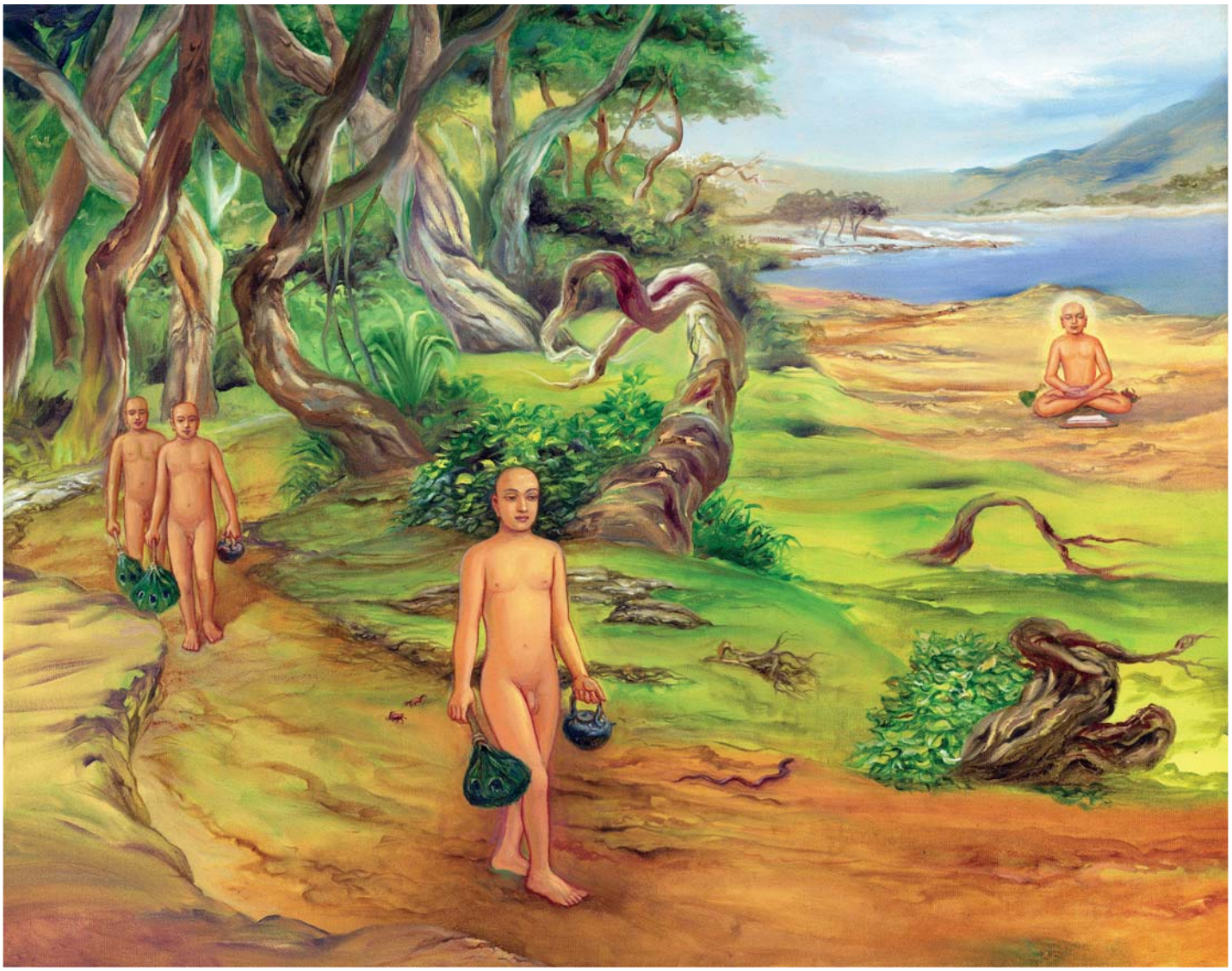

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम संयम

अहो! धन्य हैं वह दिगम्बर मुनिराज जो मुनिपने का पालन करते हुए किसी भी जीव का घात न हो तथा इन्द्रिय सुख की लालसा उत्पन्न न हो इस प्रकार प्राणी संयम तथा इन्द्रिय संयम का पालन करते हैं। सदैव चार पग आगे की भूमि देखकर चलते हुए ईर्या समिति का पालन करते हैं तथा पाँच इन्द्रिय और मन समस्त से निग्रह करके अपनी आत्मा में लीन रहते हुए संयम धर्म का पालन करते हैं।

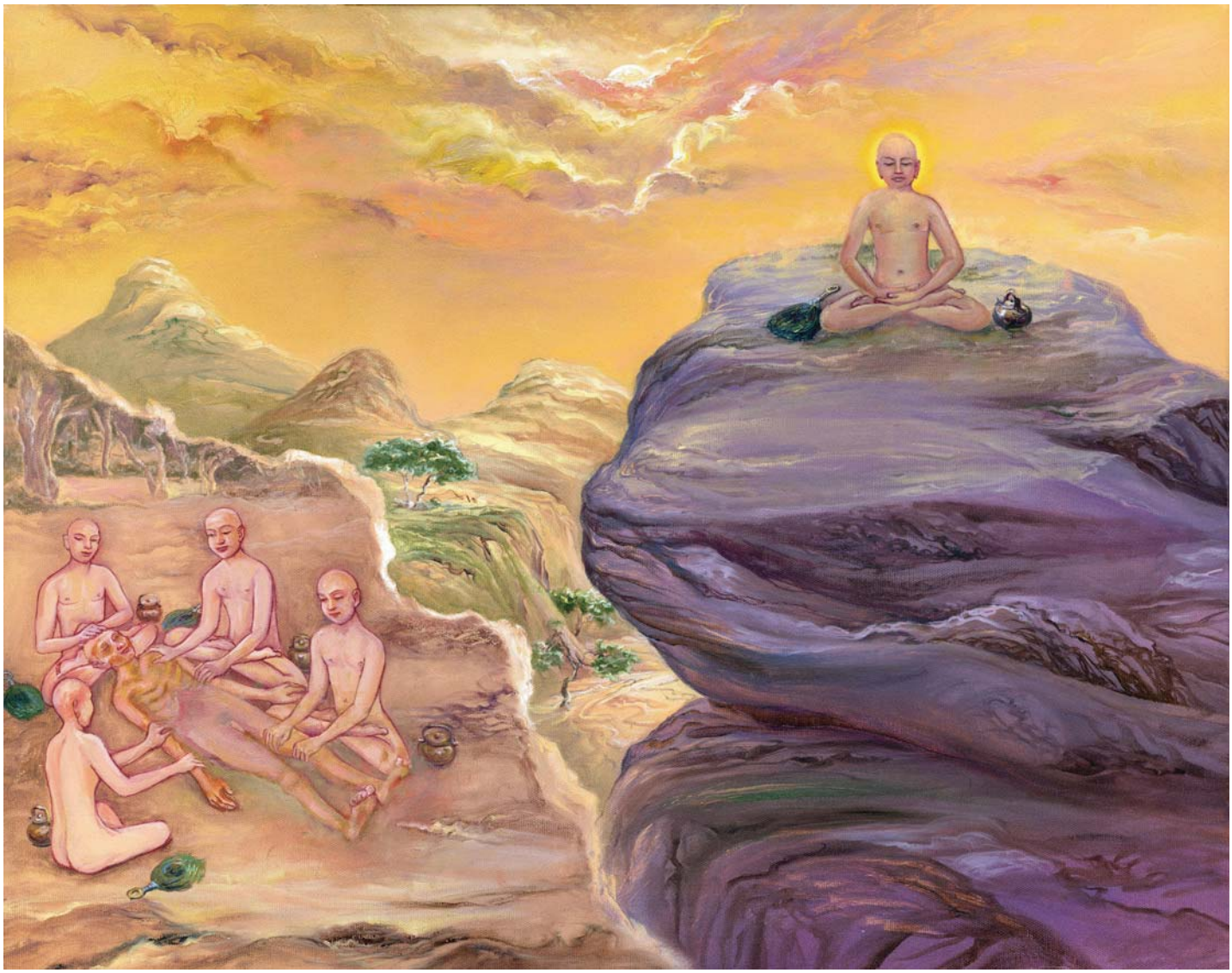

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम तप

अहो! दिगम्बर मुनिराज अंतरंग और बहिरंग दोनों प्रकार के तप को तपते हुए अपनी इच्छाओं का निरोध करते हैं। शरीर के लिए जो अनुकूल हो ऐसी परिस्थितियों में न रहते हुए; तीव्र गर्मी में भी ऊँचे पर्वत पर जाकर तप करते हैं और अपनी आत्मा में लीन रहते हैं। उन्हें किसी भी प्रकार की परिस्थिति में कषाय रञ्चमात्र भी प्रकट नहीं होती तथा अंतिम समय में सल्लेखना धारण करते हुए समस्त प्रकार से राग को हटाते हुए समाधिमरण को प्राप्त करते है।

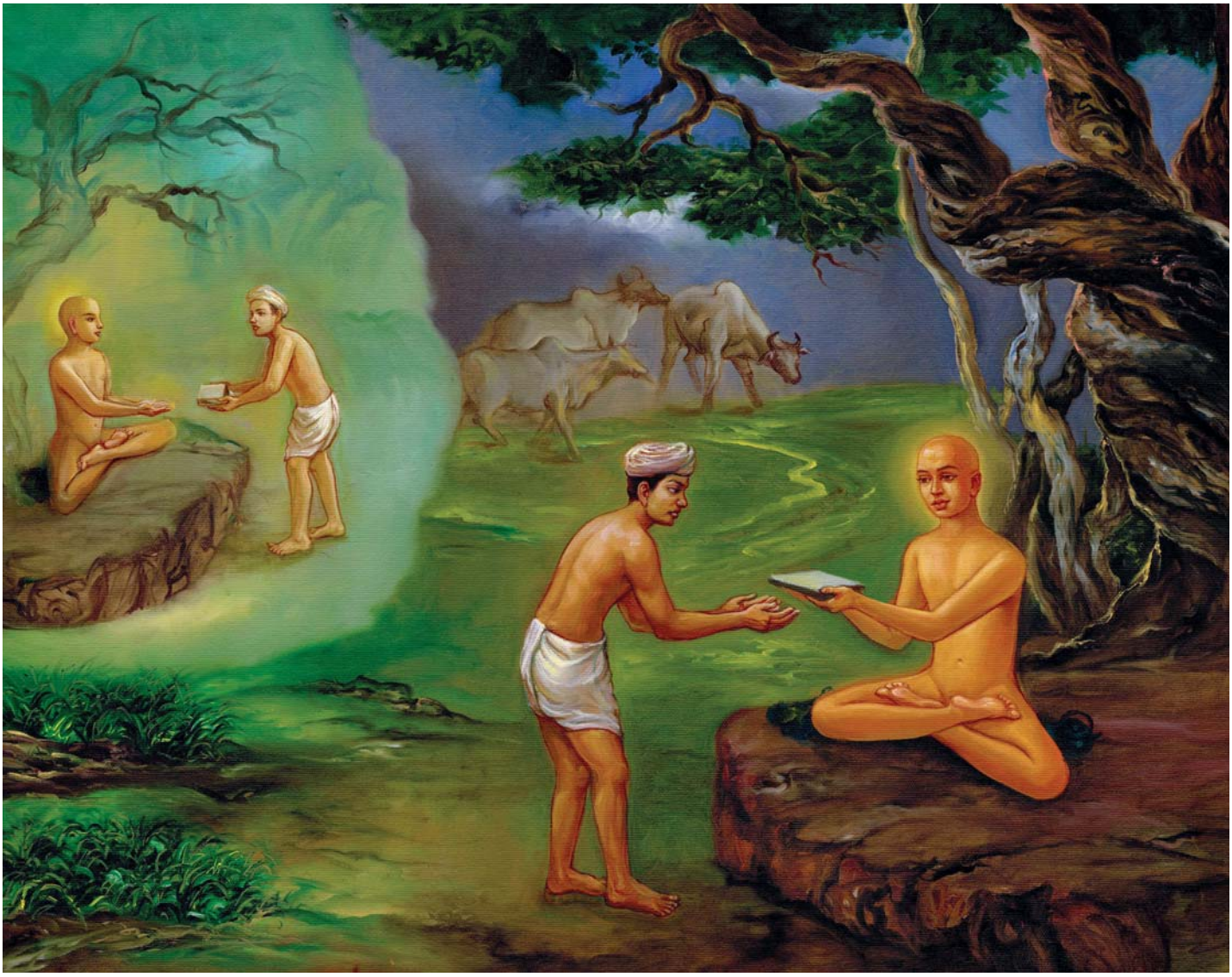

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम त्याग

एक समय कौण्डेश ग्वाला अपनी गायों को जंगल में चरा रहा था और तभी वहाँ आग लग जाती हैं; तब एक वृक्ष जो जल नहीं रहा था उसके कोटर से उसे एक शास्त्र प्राप्त होता है। शास्त्रज्ञान से अनभिज्ञ वह ग्वाला उस शास्त्र को पवित्र भाव से एक मुनिराज को दान कर देता है। उस शास्त्र दान का फल महाज्ञान होता है; जिसके प्रभाव से ग्वाले का जीव अगले भव में आचार्य कुन्दकुन्द बनता है। त्याग अर्थात सिर्फ वस्तु मात्र का त्याग ही नहीं है उसके राग का भी त्याग होता है। अहो! धन्य हैं वह दिगम्बर साधु जिन्हें किञ्चित भी राग शेष नहीं है, वह जिन शास्त्रों की रचना करते हैं उनकी समाप्ति पर वह शास्त्र भी श्रावकों को सौंप देते हैं।

22” x 28” | Oil on Canvas

उत्तम आकिंचन्य

अहो! ज्ञान दर्शनमय स्वरूप के सिवाय किञ्चित मात्र भी परपदार्थ, जीव के नहीं है। हाथी-घोड़ा, अक्षौहिणी सेनाऐं, राजपाठ, धन-धान्य, ऐश्वर्य इत्यादि तो मात्र पुद्गल की अवस्थायें हैं, जो नाशवान हैं। इसप्रकार जानकर दिगम्बर मुनिराज निज आत्मद्रव्य में अहम् स्थापित करते हैं तथा आकिंचन्य भावना के प्रभाव से बन्ध रहित अवस्था की और बढ़ते हैं। अत: साक्षात निर्वाण का कारण ऐसे आकिंचन्य धर्म को हमें भी धारण करना चाहिए।

22" x 28" | Oil on Canvas

उत्तम ब्रह्मचर्य

स्पर्शन इन्द्रियादि के समस्त विषयों से राग छोड़कर ब्रह्म स्वभावी आत्मा में लीन रहना वह ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य के पालन से यह जीव हिंसादि समस्त पापों से निवृत हो जाता है। जब रामचंद्र जी मुनिव्रत धारण करके वन में ध्यान में लीन थे तब वहाँ स्वर्ग से सीता जी का जीव उनको ध्यान से डिगाने के लिए आता है; परन्तु धन्य हैं वह रामचंद्र मुनिराज जो आत्मा में ऐसे लीन थे की उन्हें बाहर की किंचित भी खबर नहीं थी। ब्रह्मचर्य धर्म के प्रभाव से रामचंद्रजी केवलज्ञान को प्राप्त करते हैं।

www.gurukahanmuseum.org | info@gurukahanmuseum.org

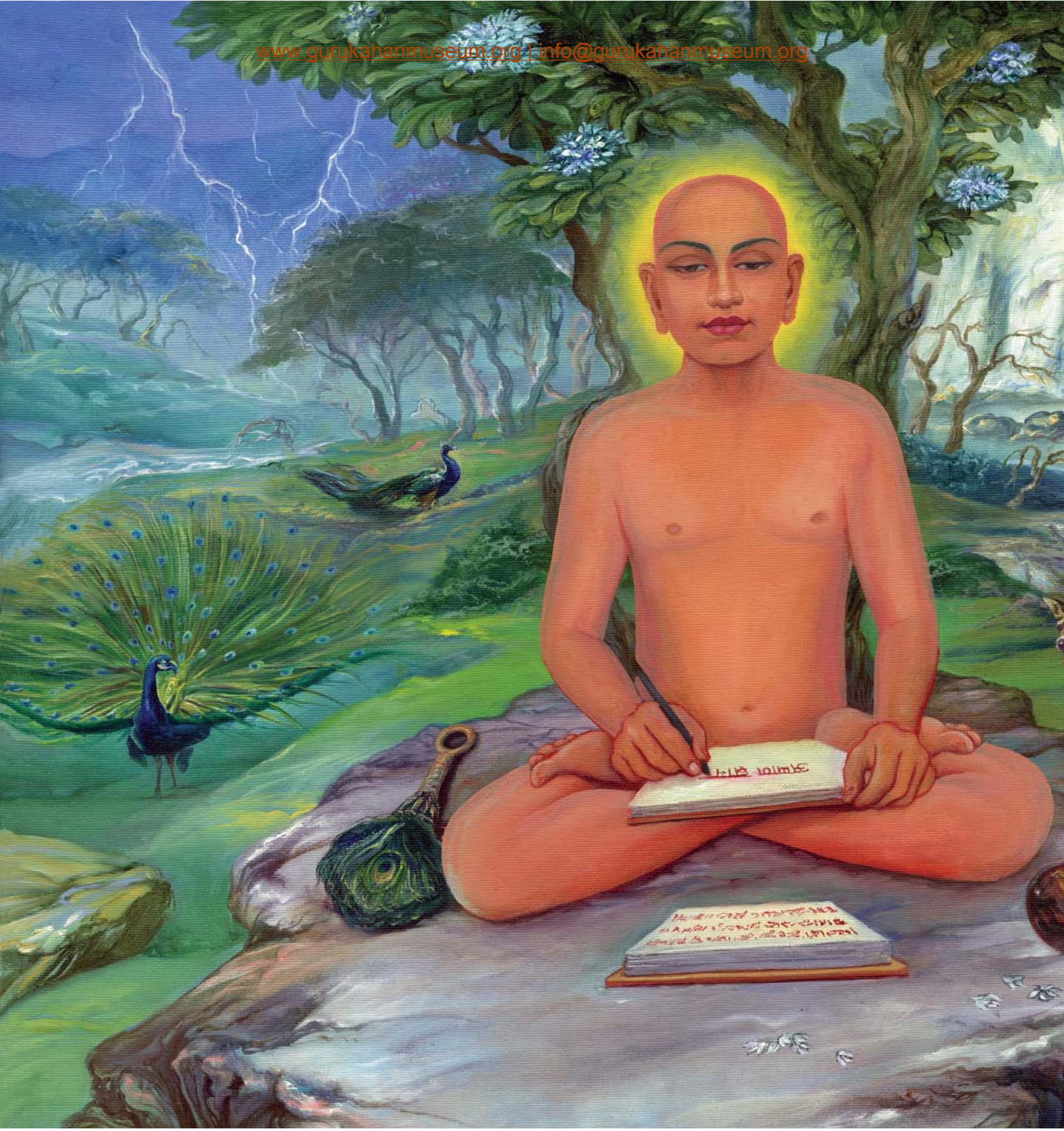

22” x 28” | Oil on Canvas

आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव

परम आध्यात्मिक सन्त कुन्दकुन्दाचार्यदेव को समग्र दिगम्बर जैन आचार्य परम्परा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। उन्हें भगवान महावीर और गौतम गणधर के तत्काल बाद मंगलस्वरूप स्मरण किया जाता है। दिगम्बर जैन समाज कुन्दकुन्दाचार्य देव के नाम एवं काम (महिमा) से जितना परिचित है, उनके जीवन से उतना ही अपरिचित है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इनका समय विक्रम सम्वत् का आरंभिक काल है। इन्हें कई ऋद्धियाँ प्राप्त थीं और इन्होंने विदेहक्षेत्र में बिराजमान विद्यमान तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधरनाथ के साक्षात् दर्शन किए थे। इनका वास्तविक नाम पद्मनंदि था परंतु कौण्डकुण्डपुर के वासी होने से इन्हें कुन्दकुन्दाचार्य कहा जाने लगा।

कुन्दकुन्दाचार्यदेव के निम्नलिखित ग्रंथ उपलब्ध हैं- समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड, द्वादशानुप्रेक्षा और दशभक्ति। रयणसार और मूलाचार भी उनके ही ग्रंथ कहे जाते हैं। कहते हैं उन्होंने चौरासी पाहुड़ लिखे थे। यह भी कहा जाता है कि इन्होंने "षट्खण्डागम" के प्रथम तीन खण्डों पर 'परिकर्म 'नामक टीका लिखी थी, जो अभी उपलब्ध नहीं है। समयसार जैन अध्यात्म का प्रतिष्ठापक अद्वितीय महान शास्त्र है। आचार्य कुन्दकुन्द देव के ग्रंथों को आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी ने जन-जन की वस्तु बना दिया है। उन्होंने उन पर अनेकानेक प्रवचन करके उनके रहस्यों को उद्घाटित किया है।

22” x 28” | Oil on Canvas

आचार्य श्री अमृतचंद्रदेव

आध्यात्मिक सन्तों में कुन्दकुन्दाचार्य के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे है आचार्य श्री अमृतचंद्र। दु:ख की बात है कि विक्रम की १० वीं सदी के लगभग होने वाले इन महान आचार्य के बारे में उनके ग्रंथों के अलावा एक तरह से हम कुछ भी नहीं जानते है।

आपका संस्कृत भाषा पर अपूर्व अधिकार था। आपकी गद्य और पद्य-दोनों प्रकार की रचनाओं में आपकी भाषा भावानुवर्तिनी एवं सहज बोधगम्य, माधुर्य गुण से युक्त है। आचार्य श्री आत्मरस में निमग्न रहने वाले महात्मा थे; अत:आपकी रचनायें अध्यात्म-रस से ओतप्रोत है। आपके सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में है। आपकी रचनायें गद्य और पद्य दोनों प्रकार की पाई जाती है। गद्य रचनाओं में आचार्य कुन्दकुन्द देव के महान ग्रंथों पर लिखी हुई टीकायें -

१. समयसार टीका-जो "आत्मख्याति" के नाम से जानी जाती है;
२. प्रवचनसार टीका-जिसे "तत्त्व-प्रदीपिका" कहते हैं तथा
३. पञ्चास्तिकाय टीका-जिसका नाम "समय व्याख्या" हैं।
४. तत्त्वार्थ सार-यह ग्रंथ गृद्धपिच्छ उमास्वामी के गद्य सूत्रों का एक तरह से पद्यानुवाद है।
५. पुरुषार्थसिद्धियुपाय-यह गृहस्थ धर्म पर आपका मौलिक ग्रंथ है। इसमें हिंसा और अहिंसा का बहुत ही तथ्यपूर्ण विवेचन किया गया है।

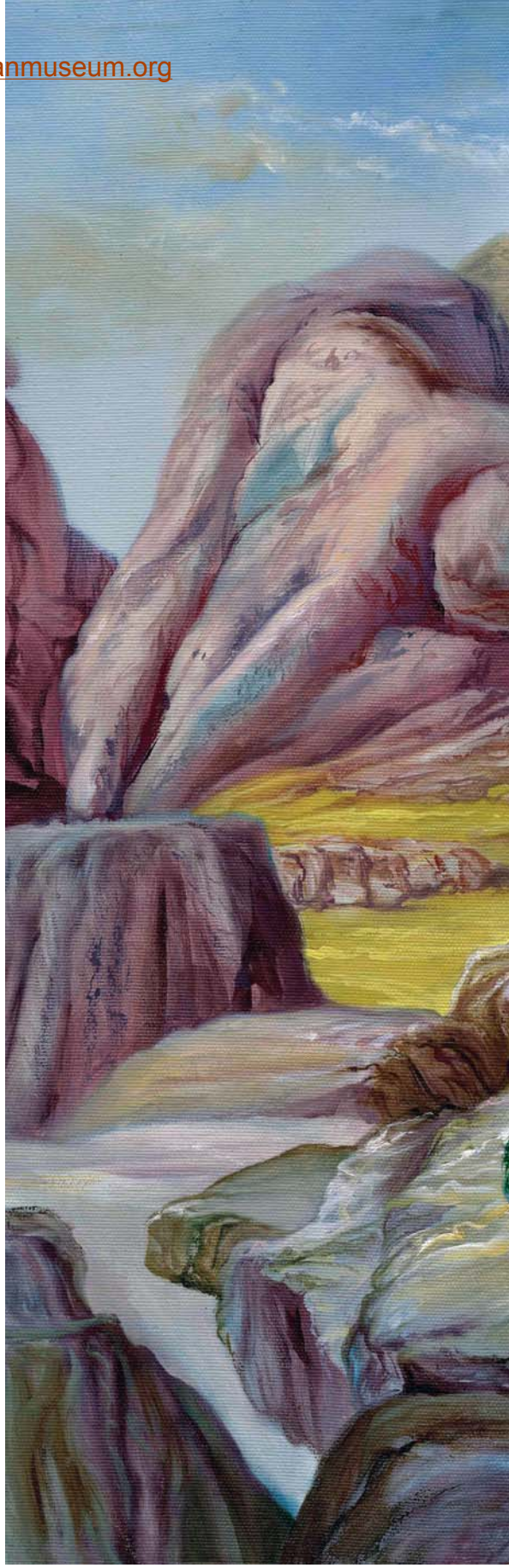

मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव

श्री कुंदकुंदाचार्य के सबसे प्रसिद्ध अध्यात्म ग्रंथ नियमसार की संस्कृत टीका श्री पद्मप्रभमलधारिदेव द्वारा लिखी गई थी। इनका समय १००० इस्वी के लगभग माना जाता है। श्री पद्मप्रभमलधारिदेव ने नियमसार पर अपनी टीका में अमृतचंद्राचार्य के कुछ छंदों को उद्धृत किया है और कई जगह उल्लेखित भी किया है इससे वह श्री अमृतचंद्र आचार्य के बाद हुए थे ऐसा पता चलता है।

नियमसार परमागम मुख्यतः मोक्षमार्ग के निरुपचार निरुपण का अनुपम ग्रंथ है। "नियम" अर्थात् जो अवश्य करने योग्य हो अर्थात् रत्नत्रय तथा 'नियमसार' अर्थात् नियम का सार अर्थात् शुद्ध रत्नत्रय। उस शुद्ध रत्नत्रय की प्राप्ति परमात्मतत्त्व के आश्रय से ही होती है। निगोद से लेकर सिद्ध तक की सर्व अवस्थाओं में...अशुभ, शुभ या शुद्ध विशेषों में...विद्यमान जो नित्यनिरंजन टंकोत्कीर्ण शाश्वत एकरुप शुद्धद्रव्य सामान्य वह परमात्मतत्त्व है वही शुद्ध अन्तःतत्त्व, कारण-परमात्मा, परम-पारिणामिकभाव आदि नामों से कहा जाता है। इस परमात्मतत्त्व की उपलब्धि अनादि काल से अनन्तानन्त दुःखों का अनुभव करनेवाले जीवों ने एक क्षणमात्र भी नहीं की और इसलिये सुख प्राप्ति के उसके सर्व...प्रयत्न (द्रव्यलिंगी मुनि के व्यवहार-रत्नत्रय सहित) सर्वथा व्यर्थ गये हैं। इसलिये श्री पद्मप्रभमलधारिदेव द्वारा लिखी गई इस परमागम की टीका का एकमात्र उद्देश जीवों को परमात्मत्त्व की उपलब्धि व आश्रय करवाना है।

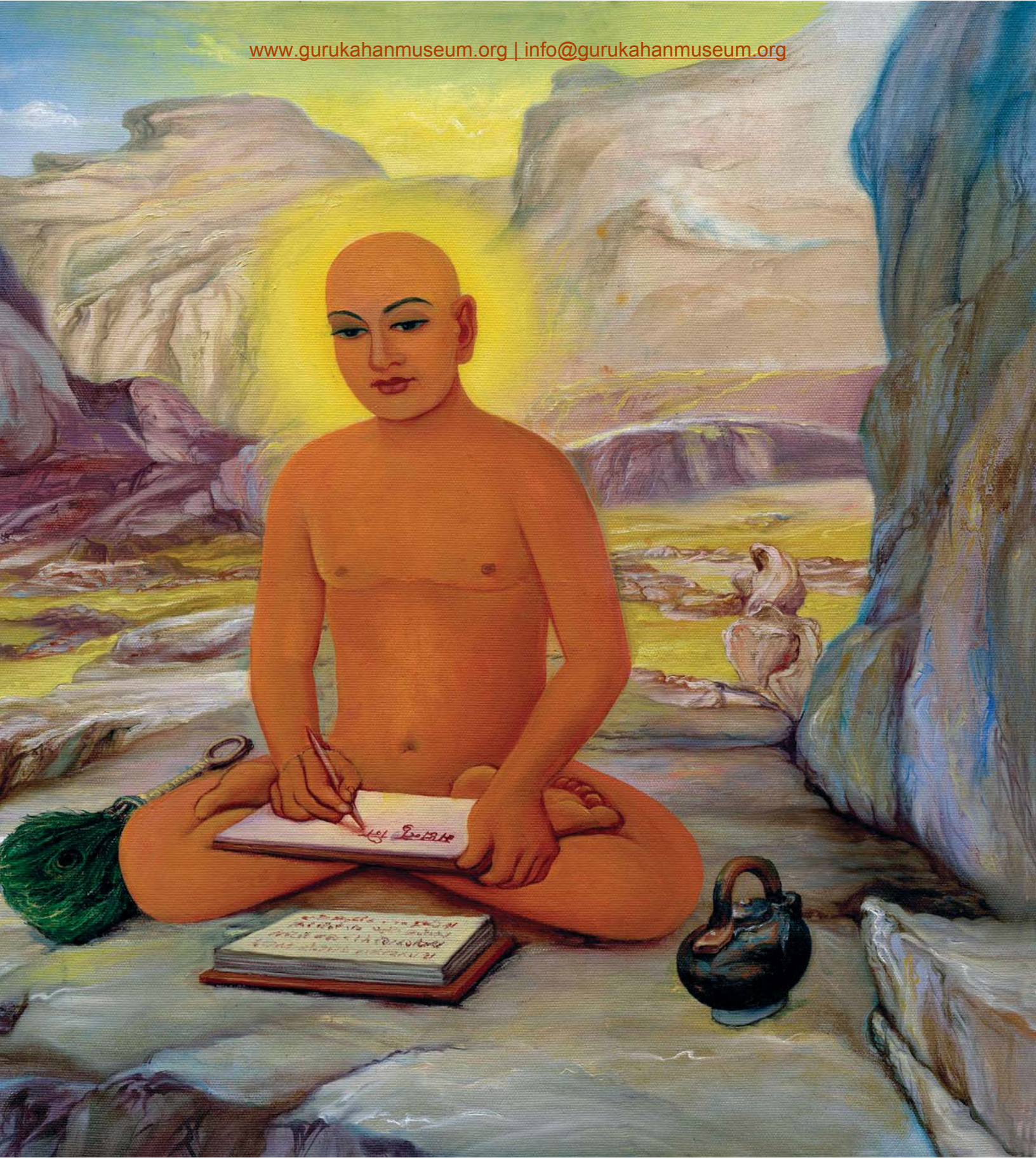

22” x 28” | Oil on Canvas

पू. बहिनश्री के संबंध में पूज्य सद्गुरुदेवश्री के हृदयोद्गार...

"बहिनों का महान भाग्य है कि चंपाबेन जैसी 'धर्मरत्न' इस काल पैदा हुई हैं। बहिन तो भारत का अनमोल रतन है। अतीन्द्रिय आनन्द का नाथ उनको अंतर से जागृत हुआ है। उनकी अंतर की स्थिति कोई और ही है। उनकी सुदृढ़ निर्मल आत्मदृष्टि तथा निर्विकल्प स्वानुभूति का जोड़ इस काल मिलना कठिन है। ...असंख्य अरब वर्ष का उन्हें जातिस्मरणज्ञान है। बहिन ध्यान में बैठती हैं तब कई बार वह अंतर में भूल जाती हैं कि 'मैं महाविदेह में हूँ या भरत में'!!.... बहिन तो अपने अंतर में—आत्मा के कार्य में—ऐसी लीन हैं कि उन्हें बाहर की कुछ पड़ी ही नहीं है। प्रवृत्ति का उनको जरा भी रस नहीं है। उनकी बाहर प्रसिद्धि हो वह उन्हें स्वयं को बिल्कुल पसन्द नहीं है। परन्तु हमें ऐसा भाव आता है कि बहिन कई वर्ष तक छिपी रहीं, अब लोग बहिन को पहिचानें।.... "

आत्मसाधना का पुरुषार्थ जागृत करने वाले व सांसारिक मोह को घटाने वाले पू. बहिनश्री के अपूर्व

वचनामृत

प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन

36” x 48” | Oil on Canvas

तीर्थंकरदेव की दिव्यध्वनि जो कि जड़ है उसे भी कैसी उपमा दी है! अमृतवाणी की मिठास देखकर द्राक्षें शरमाकर वनवास में चली गईं और इक्षु अभिमान छोड़कर कोल्हू में पिल गया! ऐसी तो जिनेन्द्रवाणी की महिमा गायी है; फिर जिनेन्द्रदेव के चैतन्य की महिमा का तो क्या कहना!

(वचनामृत नं. – १५)

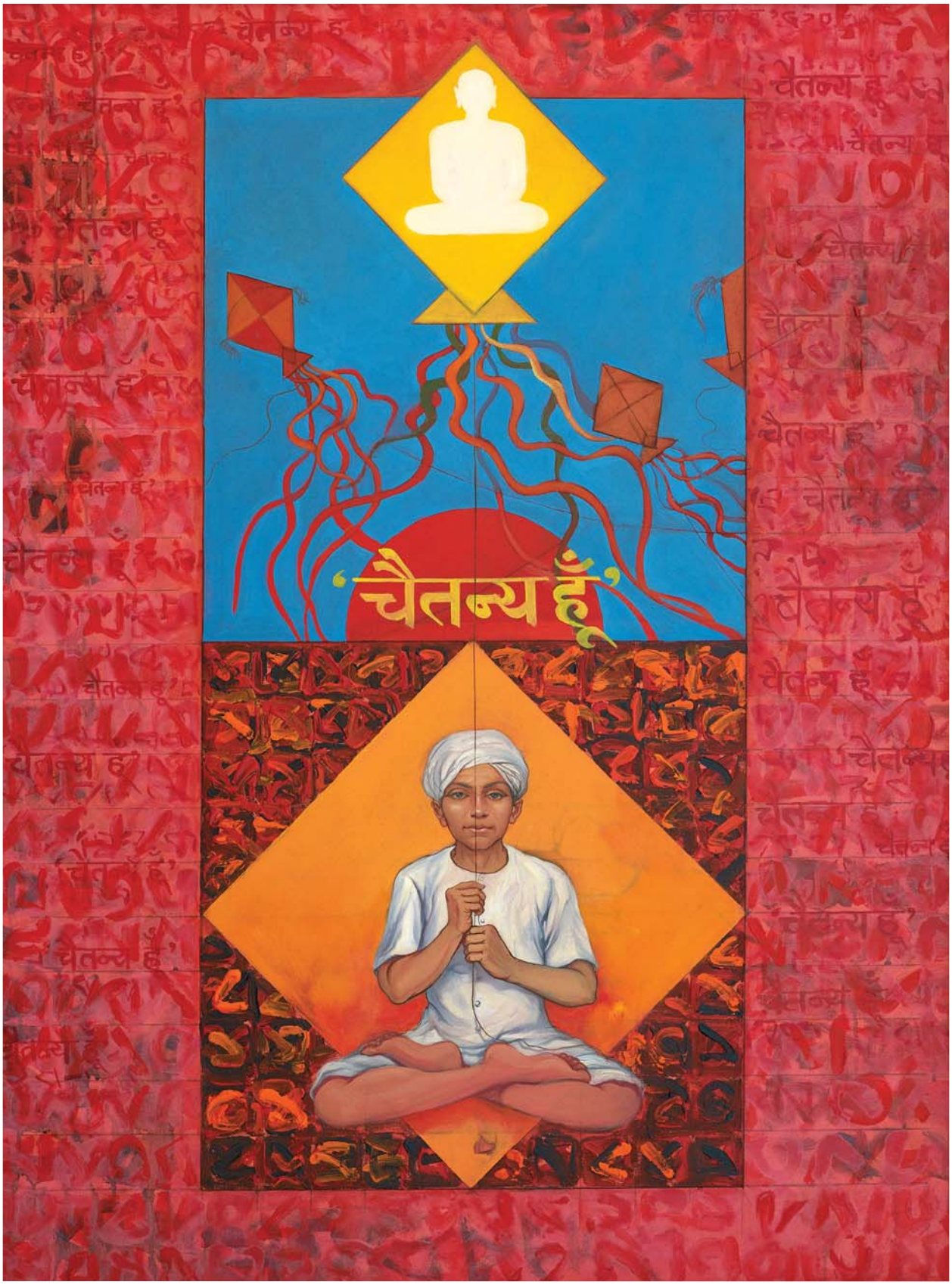

48" x 36" | Oil on Canvas

दृष्टि द्रव्य पर रखना है। विकल्प आयें परन्तु दृष्टि एक द्रव्य पर है। जिस प्रकार पतंग आकाश में उड़ती है परन्तु डोर हाथ में होती है, उसी प्रकार "चैतन्य हूँ" यह डोर हाथ में रखना। विकल्प आयें, परन्तु चैतन्यतत्त्व सो मैं हूँ – ऐसा बारम्बार अभ्यास करने से दृढ़ता होती है।

(वचनामृत नं. – १८)

36” x 48” | Oil on Canvas

जब बीज बोते हैं तब प्रगट रूप से कुछ नहीं दिखता, तथापि विश्वास है कि ‘इस बीज में से वृक्ष उगेगा, उसमें से डालें-पत्ते-फलादि आयेंगे’ पश्चात उसका विचार नहीं आता; उसी प्रकार मूल शक्तिरूप द्रव्य को यथार्थ विश्वासपूर्वक ग्रहण करने से निर्मल पर्याय प्रगट होती है; द्रव्य में प्रगटरूप से कुछ दिखाई नहीं देता इसलिये विश्वास बिना “क्या प्रगट होगा” ऐसा लगता है, परन्तु द्रव्यस्वभाव का विश्वास करने से निर्मलता प्रगट होने लगती है।

(वचनामृत नं. – ३०)

60” x 30” | Oil on Canvas

जिस प्रकार कोई बालक अपनी माता से बिछुड़ गया हो, उससे पूछें कि “तेरा नाम क्या?” तो कहता है “मेरी माँ”, “तेरा गाँव कौन?” तो कहता है “मेरी माँ”, “तेरे माता-पिता कौन हैं?” तो कहता है “मेरी माँ”, उसी प्रकार जिसे आत्मा की सच्ची रुचि से ज्ञायकस्वभाव प्राप्त करना है उसे हरएक प्रसंग में “ज्ञायकस्वभाव....ज्ञायकस्वभाव”- ऐसी लगन बनी ही रहती है, उसी की निरंतर रुचि एवं भावना रहती है।

(वचनामृत नं. – ४३)

30” x 60” | Oil on Canvas

साधक दशा में शुभ भाव बीच में आते हैं, परन्तु साधक उन्हें छोड़ता जाता है; साध्य का लक्ष नहीं चूकता। –जैसे मुसाफिर एक नगर से दूसरे नगर जाता है तब बीच में अन्य-अन्य नगर आयें उन्हें छोड़ता जाता है, वहाँ रुकता नहीं है; जहाँ जाना है वहीं का लक्ष रहता है।

(वचनामृत नं. – ४०)

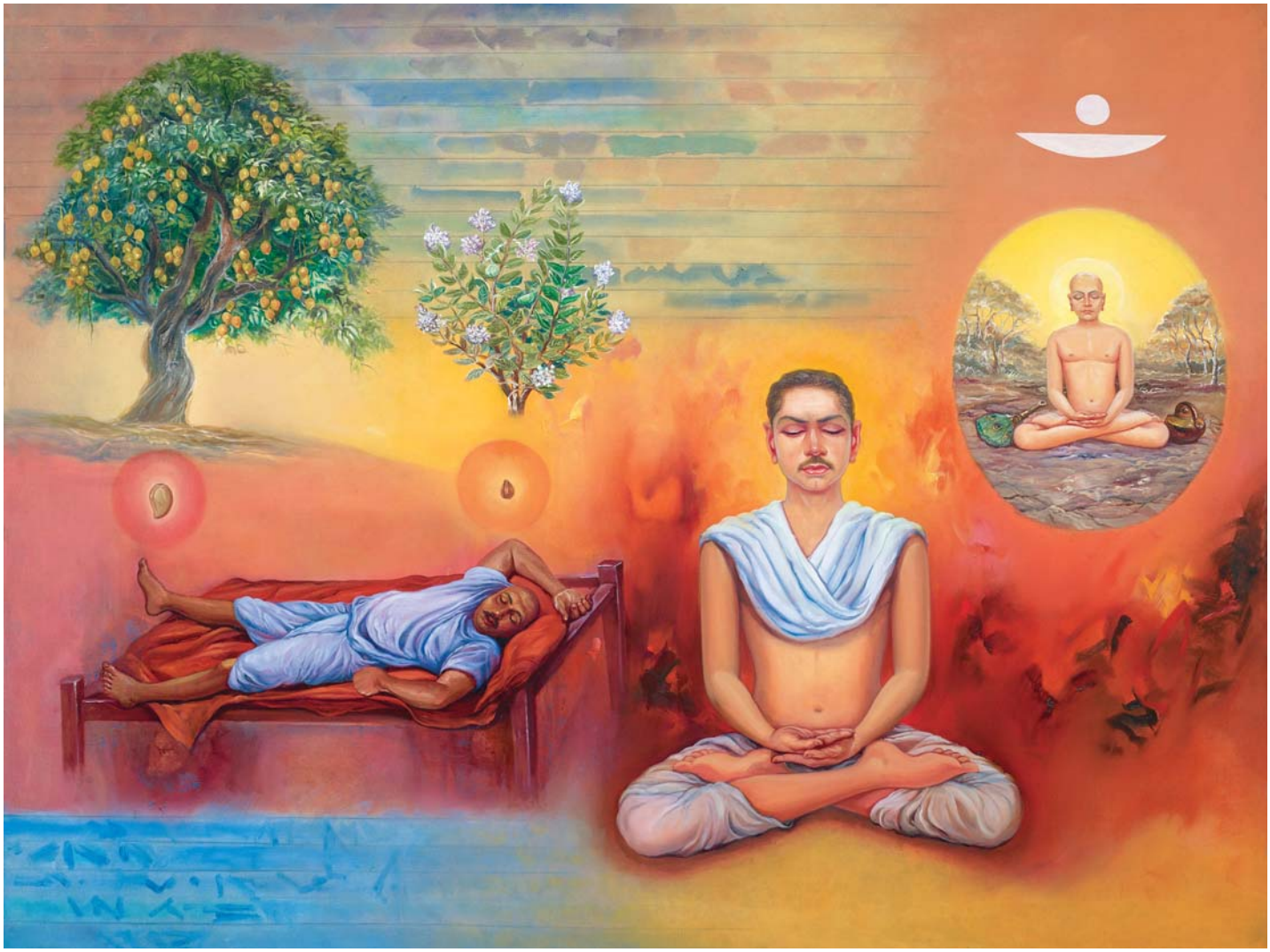

36” x 48” | Oil on Canvas

जैसा बीज बोये वैसा वृक्ष होता है; आम का बीज (गुठली) बोये तो आम का वृक्ष होगा और अकौआ (आक) का बीज बोयेगा तो अकौए का वृक्ष उगेगा। जैसा कारण देंगे वैसा कार्य होता है। सच्चा पुरुषार्थ करें तो सच्चा फल मिलता ही है।

(वचनामृत नं. – ६३)

36” x 48” | Oil on Canvas

तस्वीर खींची जाती है वहाँ जैसे चेहरे के भाव होते हैं तदनुसार स्वयमेव कागज पर चित्रित हो जाते हैं, कोई चित्रण करने नहीं जाता। उसी प्रकार कर्म के उदयरूप चित्रकारी सामने आये तब समझना कि मैंने जैसे भाव किये थे वैसा ही यह चित्रण हुआ है। यद्यपि आत्मा कर्म में प्रवेश करके कुछ करता नहीं है, तथापि भाव के अनुरूप ही चित्रण स्वयं हो जाता है। अब दर्शनरूप, ज्ञानरूप, चारित्ररूप परिणमन कर तो संवर -निर्जरा होगी। आत्मा का मूल स्वभाव दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप है, उसका अवलम्बन करने पर द्रव्य में जो (शक्तिरूप से) विद्यमान है वह (व्यक्तिरूप से) प्रगट होगा।

(वचनामृत नं. – ७६)

36” x 48” | Oil on Canvas

जैसे स्वभाव से निर्मल स्फटिक में लाल-काले फूल के संयोग से रंग दिखते हैं तथापि वास्तव में स्फटिक रंगा नहीं गया है, वैसे ही स्वभाव से निर्मल आत्मा में क्रोध-मानादि दिखायी दें तथापि वास्तव में आत्मद्रव्य उनसे भिन्न है। वस्तुस्वभाव में मलिनता नहीं है। परमाणु पलटकर वर्ण-गंध-रस-स्पर्श से रहित नहीं होता वैसे ही वस्तुस्वभाव नहीं बदलता। यह तो पर से एकत्व तोड़ने की बात है। अंतर में वास्तविक प्रवेश कर तो (पर से) पृथक्ता हो।

(वचनामृत नं. – ८१)

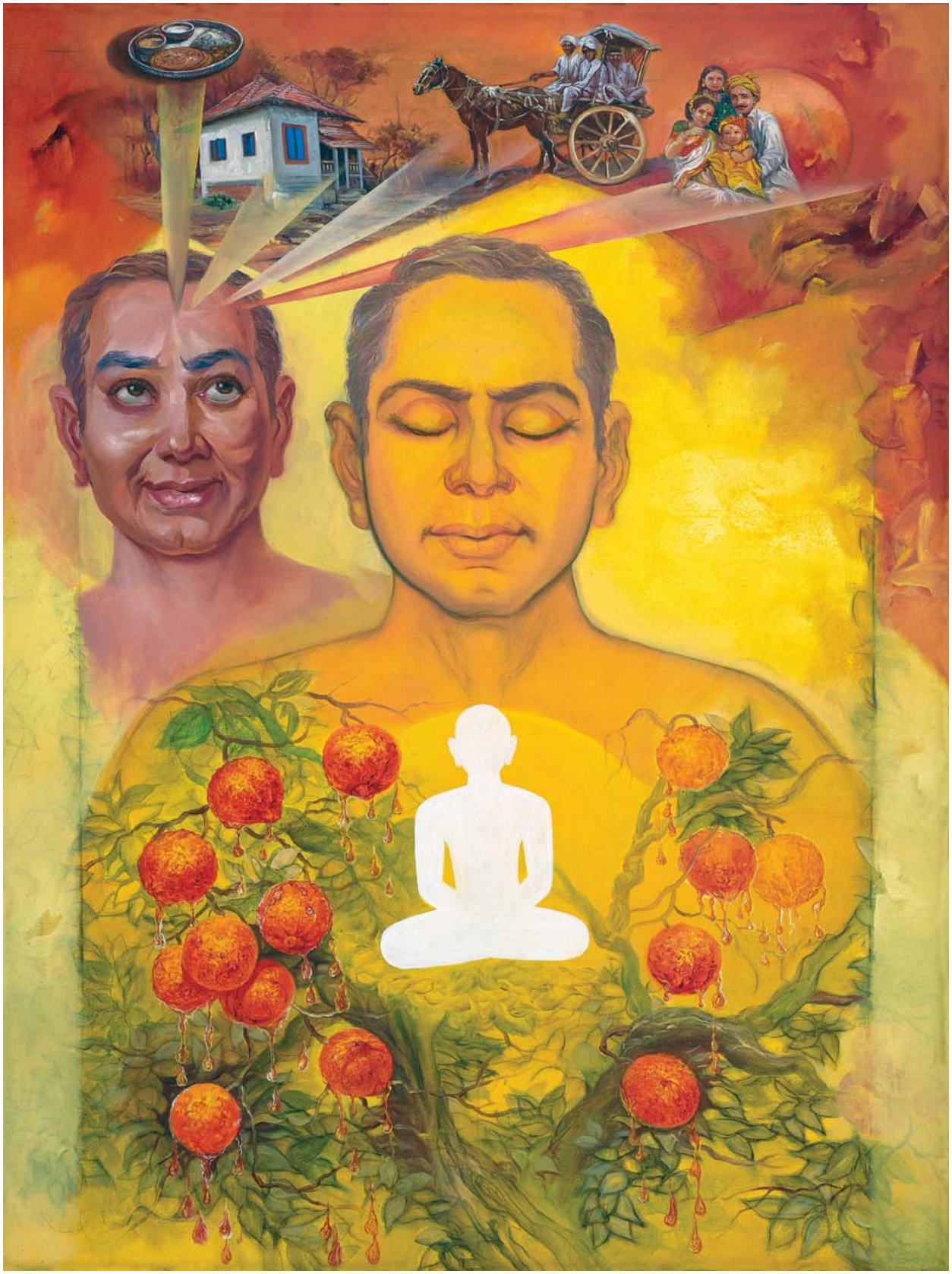

48" x 36" | Oil on Canvas

संसार की अनेक अभिलाषारूप क्षुधा से दु:खित मुसाफिर! तू विषयों के लिये क्यों तरसता है? वहाँ तेरी भूख शांत नहीं होगी। अंतर में अमृतफलों का चैतन्यवृक्ष लगा है उसे देख तो अनेक प्रकार के मधुर फल एवं रस तुझे प्राप्त होंगे, तू तृप्त-तृप्त हो जायेगा।

(वचनामृत नं. – ९०)

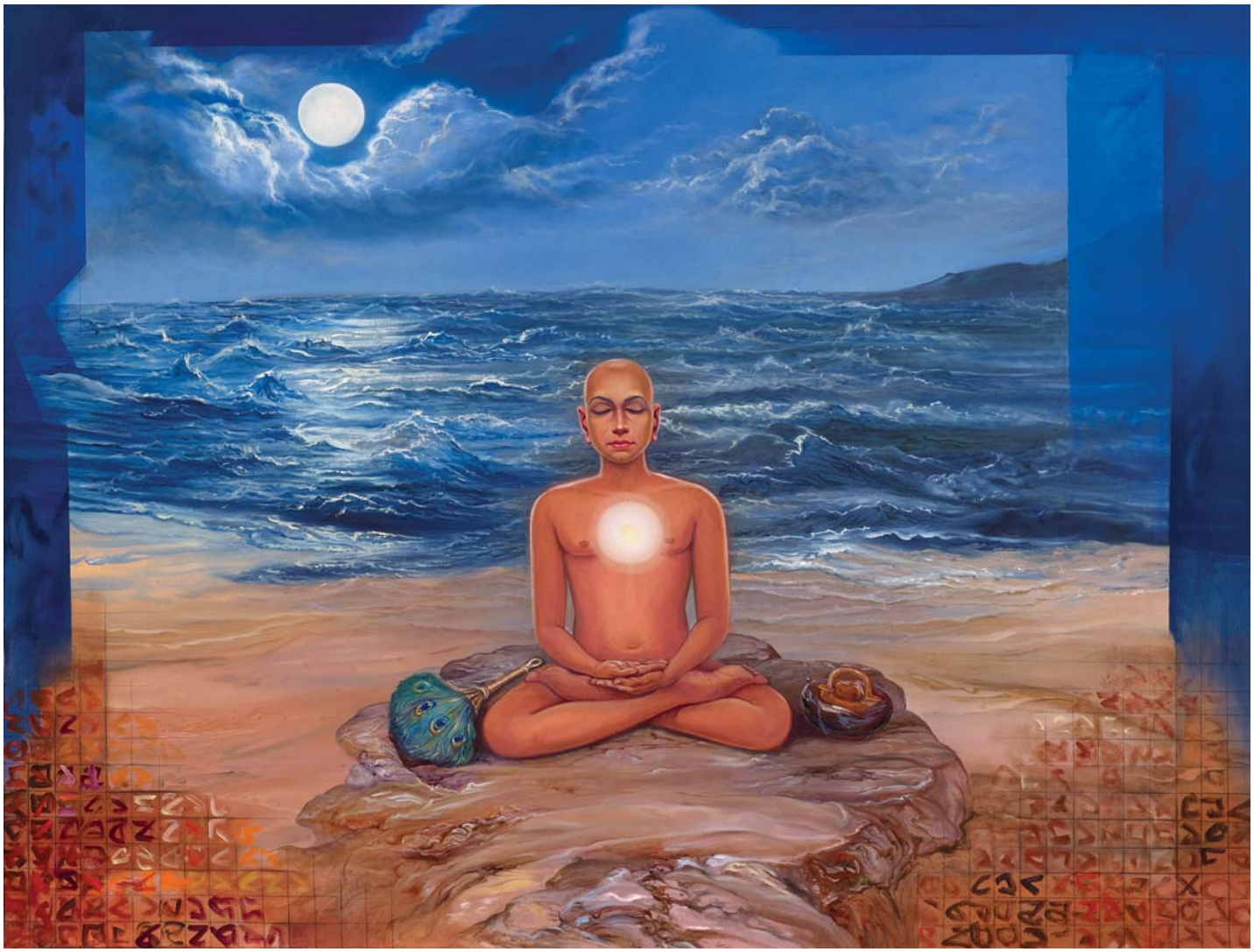

36” x 48” | Oil on Canvas

अहा! आत्मा अलौकिक चैतन्यचन्द्र है, जिसका अवलोकन करने से मुनियों को वैराग्य उछल पड़ता है। मुनि शीतल-शीतल चैतन्यचन्द्र को निहारते हुए अघाते ही नहीं, थकते ही नहीं।

(वचनामृत नं. – ९१)

36” x 48” | Oil on Canvas

आत्मारूपी परमपवित्र तीर्थ है उसमें स्नान कर। आत्मा पवित्रता से भरपूर है, उसके अंदर उपयोग लगा। आत्मा के गुणों में सराबोर हो जा। आत्मतीर्थ में ऐसा स्नान कर कि पर्याय शुद्ध हो जाय और मलिनता दूर हो।

(वचनामृत नं. – १०९)

36” x 48” | Oil on Canvas

आत्मा तो ज्ञाता है। आत्मा की ज्ञातृत्वधारा को कोई रोक नहीं सकता। भले रोग आये या उपसर्ग आये, आत्मा तो निरोग और निरुपसर्ग है। उपसर्ग आया तो पांडवों ने अंतर में लीनता की, तीन ने तो केवलज्ञान प्रगट किया। अटके तो अपने से अटकता है, कोई अटकाता नहीं है।

(वचनामृत नं. – १२८)

36” x 48” | Oil on Canvas

राजा के दरबार में जाना हो तो आसपास घूमता रहता है और फिर एक बार अन्दर घुस जाता है; उसी प्रकार स्वरूप के लिये देव-शास्त्र-गुरु की समीपता रखकर अन्दर जाना सीखे तो एक बार निज घर देख ले।

(वचनामृत नं. – १५३)

36” x 48” | Oil on Canvas

जैसे कोई राजमहल को पाकर फिर बाहर आये तो खेद होता है, वैसे ही सुखधाम आत्मा को प्राप्त करके बाहर आ जाने पर खेद होता है। शांति और आनन्द का स्थान आत्मा ही है, उसमें दु:ख एवं मलिनता नहीं है –ऐसी दृष्टि तो ज्ञानी को निरंतर रहती है।

(वचनामृत नं. – १७२)

36” x 48” | Oil on Canvas

साधक जीव को अपने अनेक गुणों की पर्यायें निर्मल होती हैं, खिलती हैं। जिस प्रकार नन्दनवन में अनेक वृक्षों के विविध प्रकार के पत्र-पुष्प-फलादि खिल उठते हैं, उसी प्रकार साधक आत्मा को चैतन्यरूपी नन्दनवन में अनेक गुणों की विविध प्रकार की पर्यायें खिल उठती हैं।

(वचनामृत नं. – १७५)

36” x 48” | Oil on Canvas

नमूना देखने से पूरे माल का पता चल जाता है। दूज के चन्द्र की कला द्वारा पूरे चन्द्र का ख्याल आ जाता है। गुड़ की एक डली में पूरी गुड़ की पारी का पता लग जाता है। वहाँ (दृष्टान्त में) तो भिन्न-भिन्न द्रव्य हैं और यह तो एक ही द्रव्य है। इसलिये सम्यक्त्व में चौदह ब्रह्माण्ड के भाव आ गये। इसी मार्ग से केवलज्ञान होगा। जिस प्रकार अंश प्रगट हुआ उसी प्रकार पूर्णता प्रगट होगी। इसलिये शुद्धनय की अनुभूति अर्थात् शुद्ध आत्मा की अनुभूति वह सम्पूर्ण जिनशासन की अनुभूति है।

(वचनामृत नं. – २००)

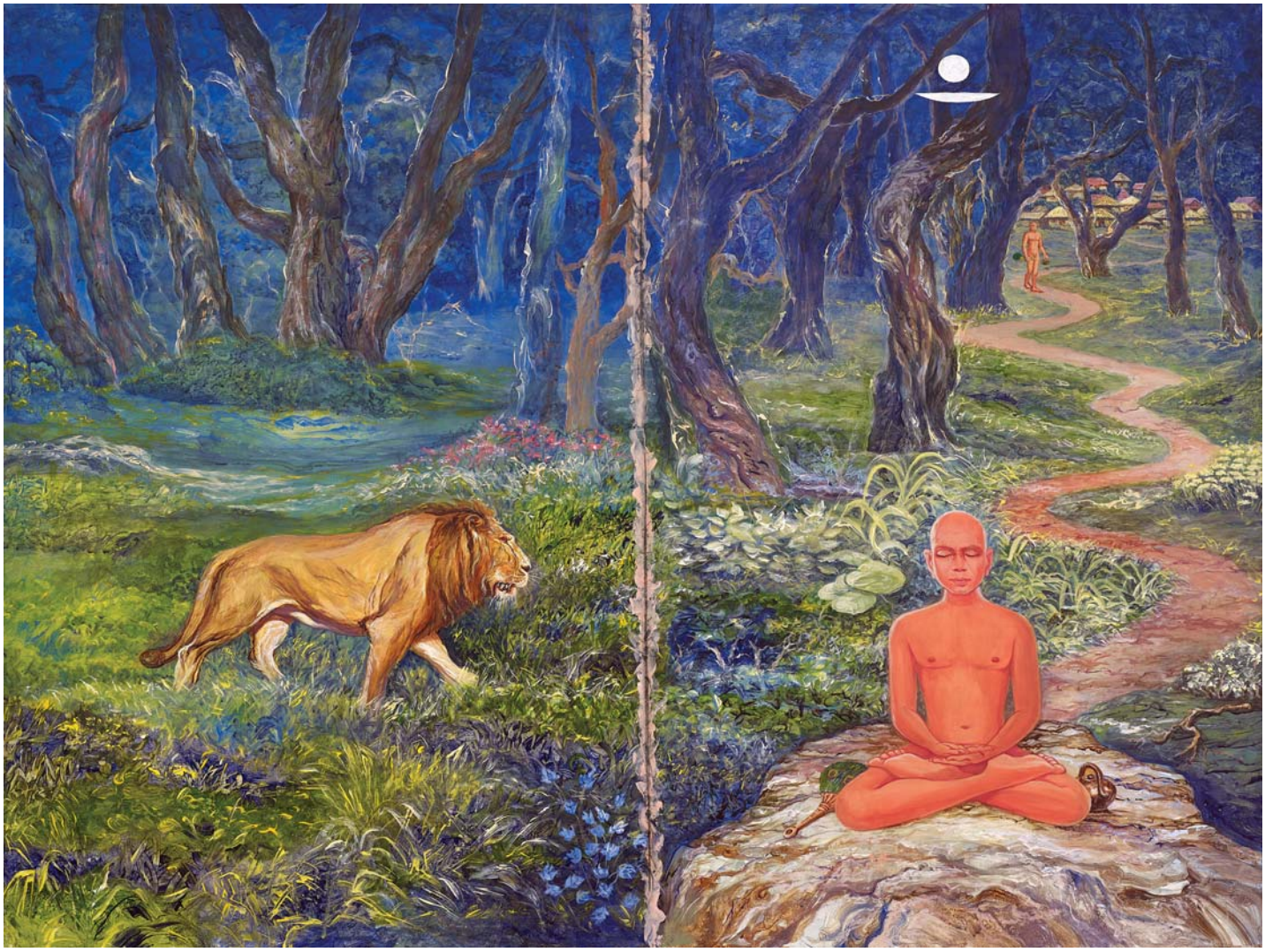

36” x 48” | Oil on Canvas

एक सत्लक्षण आत्मा –उसीका परिचय रखना। “जैसा जिसको परिचय वैसी उसकी परिणति।” तू लोकाग्र में विचरनेवाला लौकिक जनों का संग करेगा तो वह तेरी परिणति पलट जाने का कारण बनेगा। जैसे जंगल में सिंह निर्भयरूप से विचरता है उसी प्रकार तू लोक से निरपेक्षरुप अपने पराक्रम से-पुरूषार्थ से-अंतरमें विचरना।

(वचनामृत नं. – २१२)

36” x 48” | Oil on Canvas

अहा! अमोघ – रामबाण समान – गुरुवचन! यदि जीव तैयार हो तो विभाव टूट जाता है, स्वभाव प्रगट हो जाता है। अवसर चूकने जैसा नहीं है।

(वचनामृत नं. – २२५)

36” x 48” | Oil on Canvas

चैतन्यदेव की ओट ले, उसकी शरण में जा; तेरे सब कर्म टूटकर नष्ट हो जायेंगे। चक्रवर्ती मार्ग से निकले तो अपराधी लोग काँप उठते हैं, फिर यह तो तीन लोक का बादशाह – चैतन्यचक्रवर्ती! उसके समक्ष जड़कर्म खड़े ही कैसे रह सकते हैं?

(वचनामृत नं. – २४२)

36” x 48” | Oil on Canvas

अहो! देव-शास्त्र-गुरु मंगल हैं, उपकारी हैं। हमें तो देव-शास्त्र-गुरु का दासत्व चाहिये। पूज्य कहानगुरुदेव से तो मुक्ति का मार्ग मिला है। उन्होंने चारों ओर से मुक्ति का मार्ग प्रकाशित किया है। गुरुदेव का अपार उपकार है। वह उपकार कैसे भूला जाय? गुरुदेव का द्रव्य तो अलौकिक है। उनका श्रुतज्ञान और वाणी आश्चर्यकारी है। परम-उपकारी गुरुदेव का द्रव्य मंगल है, उनकी अमृतमयी वाणी मंगल है। वे मंगलमूर्ति हैं, भवोदधि-तारणहार है, महिमावन्त गुणों से भरपूर हैं, पूज्य गुरुदेव के चरणकमल की भक्ति और उनका दासत्व निरंतर हो।

(वचनामृत नं. – २६९)

36" x 48" | Oil on Canvas

बकरियों की टोली में रहनेवाला पराक्रमी सिंह का बच्चा अपने को बकरी का बच्चा मान ले, परन्तु सिंह को देखने पर और उसकी गर्जना सुनने पर "मैं तो इस जैसा सिंह हूँ" ऐसा समझ जाता है और सिंहरूप से पराक्रम प्रगट करता है, उसी प्रकार पर और विभाव के बीच रहनेवाले इस जीव ने अपने को पर एवं विभावरूप मान लिया है, परन्तु जीव का मूल स्वरूप बतलाने वाली गुरू की वाणी सुनने पर वह जाग उठता है -"मैं तो ज्ञायक हूँ" ऐसा समझ जाता है और ज्ञायकरूप परिणमित हो जाता है।

(वचनामृत नं. – ३०९)

30” x 60” | Oil on Canvas

जैसे पाताल कुआँ खोदने पर, पत्थर की आखिरी पर्त टूटकर उसमें छेद हो जाने पर पानी की जो ऊंची पिचकारी उड़ती है, उसे देखने से पाताल के पानी का अंदर का भारी जोर ख्याल में आता है, उसी प्रकार सूक्ष्म उपयोग द्वारा गहराई में चैतन्यतत्त्व के तल तक पहुँच जाने पर, सम्यग्दर्शन प्रगट होने से, जो आंशिक शुद्ध पर्याय फूटती है, उस पर्याय का वेदन करने पर चैतन्यतत्त्व का अंदर का अनंत ध्रुव सामर्थ्य अनुभव में –स्पष्ट ख्याल में आता है।

(वचनामृत नं. – ३७२)

36” x 48” | Oil on Canvas

मुनिराज के हृदय में एक आत्मा ही विराजता है। उनका सर्व प्रवर्तन आत्मामय ही है। आत्मा के आश्रय से बड़ी निर्भयता प्रगट हुई है। घोर जंगल हो, घनी झाड़ी हो, सिंह-व्याघ्र दहाड़ते हों, मेघाच्छन्न डरावनी रात हो, चारों ओर अंधकार व्याप्त हो, वहाँ गिरिगुफा में मुनिराज बस अकेले चैतन्य में ही मस्त होकर निवास करते हैं। आत्मा में से बाहर आयें तो श्रुतादि के चिंतवन में चित्त लगता है और फिर अंतर में चले जाते हैं। स्वरूप के झूले में झूलते हैं। मुनिराज को एक आत्मलीनता का ही काम है। अद्‌भुत दशा है।

(वचनामृत नं. – ३९४)

36" x 48" | Oil on Canvas

मरण तो आना ही है जब सब कुछ छूट जायेगा। बाहर की एक वस्तु छोड़ने में तुझे दु:ख होता है, तो बाहर के समस्त द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव एकसाथ छूटने पर तुझे कितना दु:ख होगा? मरण की वेदना भी कितनी होगी? "कोई मुझे बचाओ" ऐसा तेरा हृदय पुकारता होगा। परन्तु क्या कोई तुझे बचा सकेगा? तू भले ही धन के ढेर लगा दे, वैद्य-डॉक्टर भले सर्व प्रयत्न कर छूटें, आसपास खड़े हुए अनेक सगे-सम्बन्धियों की ओर तू भले ही दीनता से टुकुर-टुकुर देखता रहे, तथापि क्या कोई तुझे शरणभूत हो ऐसा है? यदि तूने शाश्वत स्वयंरक्षित ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा की प्रतीति-अनुभूति करके आत्म-आराधना की होगी, आत्मा में से शान्ति प्रगट की होगी, तो वह एक ही तुझे शरण देगी। इसलिये अभी से वह प्रयत्न कर। "सिर पर मौत मंडरा रही है" ऐसा बारम्बार स्मरण में लाकर भी तू पुरुषार्थ चला कि जिससे "अब हम अमर भये, न मरेंगे" ऐसे भाव में तू समाधिपूर्वक देहत्याग कर सके। जीवन में एक शुद्ध आत्मा ही उपादेय है।

(वचनामृत नं. – ४१२)

मोतीचन्द पिता – माता उजमबा के घर जन्म लिया।
भावनगर के उमराला में भारत भू को धन्य किया ।।
शुक्ल दूज वैशाख अठारह सौ नब्बे सन शुभ आया।
जिन–शासन का महाप्रभावक होगा सुन जग हरषाया।।

30” x 36” | Oil on Canvas

“कहानकुंवर का जन्मधाम”

सौराष्ट्र के आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का जन्म गुजरात राज्य के भावनगर जिले में उमराला नामक गाँव में विक्रम संवत् १९४६, वैशाख शुक्ल दूज, रविवार के शुभदिन को हुआ था। उजमबा माता लौरी गाते गाते कहानकुंवर को झूलाती है। सगे सम्बन्धी उस बालक की कोई अनोखी मुखमुद्रा को देखकर तृप्त नहीं होते, माता-पिता के हर्ष का पार नहीं था। ज्योतिषी बालक के भविष्य को देखने आता है और बालक को विस्मित नेत्रों से देखते ही रहता है और घोषणा करता है, “अहो! यह बालक तो जगत का तारणहार है; मानो आँगन में कोई असाधारण महात्मा पधारे है।”

चित्रकार परिचय

श्री अनिल नाईक

भारत के प्रसिद्ध कलाकार श्री अनिल नाईक का जन्म १५ अप्रैल १९५९ को मुंबई में एक कलाकार परिवार में हुआ। बचपन से आप को कला से लगाव था। आपने अपनी कला-शिक्षा मुंबई की मशहूर कला संस्थान सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से प्राप्त की और स्नातक की उपाधि प्राप्ति पर संस्था द्वारा आपको सुवर्ण पदक प्रेषित किया गया। आगे चलकर आपने इसी संस्था से प्रतिष्ठित फेलोशिप प्राप्त की और आप संस्था के प्राध्यापक भी बने।

सन १९९१ और २००१ में आपको प्रतिष्ठित राज्य सरकार पुरस्कार प्रदान किया गया एवं सन २००० में कोल्हापुर में चंद्रकान्त माण्डरे गौरव पुरस्कार, बॉम्बे आर्ट सोसायटी शताब्दी वर्ष का प्रथम पुरस्कार, आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया के विभिन्न पुरस्कार वगैरह अनेक सन्मान प्राप्त हुए। आज तक आपके कला चित्रों की अगणित संयुक्त व एकल प्रदर्शनी भारतभर और विदेशों में लगी है, जिसमें २००७ में न्युयोर्क, अमरिका की प्रदर्शनी दर्शकों के प्रतिभाव के कारण यादगार रही। सन २००४ में मुंबई के नेशनल गेलेरी ऑफ आर्ट के इन्वाइटी शो "आइडिया एंड इमेजिस" में आप के कार्य की खूब प्रसंशा की गई और इस से आप की राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रिय स्तर पर पहचान बनी।

सन २००२ में आपकी बॉम्बे आर्ट सोसायटी और जहांगीर आर्ट सोसायटी में कला सदस्य के रुप में नियुक्ति की गई तथा आप सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स कला व चित्र समिती के अध्यक्ष चुने गए। वर्तमान में आप बॉम्बे आर्ट सोसायटी के चेयरमैन के रुप में सेवा प्रदान कर रहे है। आप के कई चित्र मुंबई महानगर पालिका में स्थायी रुप से प्रदर्शित है।

आप की कला में सादगी, गहरे रंगो और महीन रेखाओं का सम्मिश्रण दिखाई देता है, जो आप की भावनाओं को परिभाषित करता है। आपने अपनी अनूठी शैली विकसित की है जिसमें आप रंगों और अन्य माध्यमों का विशेष रुप से मिश्रित प्रयोग करते है। इससे आप की कलाकृतियाँ अपनी सुंदरता कायम रखते हुए जटिलता लाती है। इसी विशिष्टता के कारण दर्शक आप के चित्रों से जुड़े रहते है।

आप ने पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी की १२५वीं जन्म जयंती के उपलक्ष में सोनगढ़ में आयोजित कला शिविर में उत्तम चित्र व रेखाचित्र बनाये। तत्पश्चात आपने गुरु कहान कला संग्रहालय के लिए श्रीमद् कुंदकुंदादि मुनिराज, उत्तम दश धर्म और पूज्य बहिन श्री के वचनामृत पर आधारित अद्भुत चित्रों का निर्माण किया है। चित्रांकन के दरम्यान आप को जैन दर्शन के रहस्यों का परिचय हुआ और आप मुनिराज और ज्ञानिओं की जीवन शैली से बेहद प्रभावित हुए।

www.gurukahanmuseum.org | info@gurukahanmuseum.org

GURU KAHAN ART MUSEUM

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust
302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg, Vile Parle (West), Mumbai - 400 056. INDIA.
Tel. No: +91 22 2613 0820 / 2610 4912
info@vitragvani.com www.vitragvani.com /vitragvanee /c/vitragvanii

Museum Address:
Guru Kahan Art Museum Songadh - 364 250. Gujarat. INDIA.
info@gurukahanmuseum.org www.gurukahanmuseum.org
/gurukahanmuseum +91 88520 88726

9 789381 057513

www.facebook.com/gurukahanmuseum

बहिनश्री के वचनामृत

9 789381 057513